RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

POSTAGE PRE-PAID
MAIL BUSINESS CENTRE
17 MAR 2016
JALANDHAR CITY R.M.S.

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 51
सृष्टि संवत् 1960853116
20 मार्च 2016
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926, 5062726

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 51, 17/20 मार्च 2016 तदनुसार 16 फाल्गुन सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

यज्ञ देव-प्राप्ति का साधन है

-ले० श्री स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अयं यज्ञो देवया अयं मियेध इमा ब्रह्माण्ययमिन्द्र सोमः।
स्तीर्णं बर्हिरा तु शक्र प्र याहि पिबा निषद्य वि मुचा हरी इह॥
-ऋ० १।१७७।४

शब्दार्थ-अयम् = यह **यज्ञ :** = यज्ञ **देवया:** = देव तक पहुँचाने वाला है। **अयम्** = यह **मियेध:** = पवित्र करने वाला है। हे **इन्द्र** = इन्द्र ! **इमा** = ये **ब्रह्माणि** = मन्त्र, अन्न तथा **अयम्** = यह **सोम** : सोम है, हे **शक्र** = शक्तिमन् ! **बर्हि:** = आसन **स्तीर्णम्** = बिछा रखा है तू तु = तो **आ + प्र + याहि** = आ ही ! **निषद्य** = बैठकर **पिब** = पी। **इह** = यहीं **हरी** = हरियों को = घोड़ों को **वि + मुच** = खोल दे।

व्याख्या-यज्ञ रचा जा रहा है। आसन बिछा दिया गया है और बुलाया जा रहा है इन्द्र को। इन्द्र चला देव की खोज में। उसे कहते हैं, आ, इस यज्ञ में सम्मिलित हो। देख-**'स्तीर्णं बर्हिरा तु शक्र प्रयाहि'** = आसन बिछा है, तू तो इस पर आ बैठ। देव से मिलने के लिए पवित्रता चाहिए, यह यज्ञ तेरे सारे मल धो देगा, तुझे विमल कर देगा, क्योंकि **'अयं यज्ञो देवया अयं मियेध:'** = यह यज्ञ देव तक ले-जाने वाला तथा यह पवित्र है और पवित्र से मेल कराता है। पवित्र की संगति से ही पवित्रता आएगी। देव से तू क्यों मिलना चाहता है ? शान्ति के लिए, सोमरस पान के लिए, तो **पिबा निषद्य'** = बैठकर पी।

बैठना चञ्चलता हटाने का द्योतक है। खाना-पीना बैठकर ही होना चाहिए। वैद्य लोग कहते हैं जल बैठकर पीना चाहिए और यह तो है सोम, किन्तु एक नियम भी है-**'विमुचा हरी इह'** = सङ्कल्प-विकल्प रुप दो घोड़ों को यही खोल दें। मनुष्य के चित्र की चंचलता का भूल संकल्प और विकल्प हैं। यही मनुष्य को नाना स्थानों में हरण करते हैं, ले-जाते हैं, अत: इन्हें हरि = घोड़े कहते हैं। सभी भाषाओं में सङ्कल्प को घोड़ा कहा गया है। 'विचार के घोड़े पर सवार', 'अस्पे ख़याल' आदि प्रयोग इसके प्रमाण हैं। जब तक तू घोड़े छोड़ेगा नहीं, सङ्कल्प-विकल्प से रहित होगा नहीं, तब तक सोम-पान का लाभ नहीं होगा। स्वास्थ्यशास्त्री कहते हैं, खान-पान का समय निश्चित होना चाहिए। उस समय चिन्ता करने से खाया-पिया अङ्ग नहीं लगता, तो परम भोजन-सोम-का पान करते समय सङ्कल्प-विकल्प का होना कितना अनिष्ट कर सकता है, इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है। सहसा सङ्कल्प-विकल्प का छोड़ना असम्भव प्रतीत होता है, अत:-

ये ते वृषणो वृषभास इन्द्र ब्रह्मयुजो वृषरथासो अत्या:।
तां आ तिष्ठ तेभिरा आह्वार्वाङ्हवामहे त्वा सुत इन्द्र सेमे॥
-ऋ० १।१७७।२

आर्य समाज मोगा के पदाधिकारियों द्वारा सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी को सम्मानित किया गया। इनके साथ खड़े हैं श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा उपप्रधान, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी।

आमंत्रण सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में 8 अप्रैल 2016 दिन शुक्रवार को आर्य समाज स्थापना दिवस राज्य स्तर पर बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

कार्यक्रम

हवन यज्ञ प्रात : 9.00 बजे — नाशता 10.00 बजे
मुख्य कार्यक्रम 11 बजे से 2 बजे तक — ऋषि लंगर 2.00 बजे
इस कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं।

सुदर्शन शर्मा — सभा प्रधान
प्रेम भारद्वाज — सभा महामंत्री

जो तेरे सुखकारी अत्यन्त पुष्ट, सुखमय रथ-[शरीर]-वाले, ब्रह्मयुक्त = ब्रह्म से मिलाने वाले घोड़े हैं उन पर सवार हो, उनके साथ आ। हम सोम के तैयार होने पर तुझे बुला रहे हैं।

सङ्कल्प नहीं छूटते, तो उन्हें ब्रह्ममय बना दो। फिर तुम्हें सोम मिलने में विलम्ब न होगा। सङ्कल्प-विकल्प छुड़ाने की कितनी सुन्दर युक्ति वेद ने बताई है। सङ्कल्प करना ही है तो ब्रह्ममय कर। मन एक समय एक ही सङ्कल्प करता है। ब्रह्ममय सङ्कल्प से प्रकृतिमय विकल्प विलीन हो जाएँगे।

क्रांतिदूत संन्यासी-महर्षि दयानन्द सरस्वती

-डा. सुशील वर्मा, फाजिल्का,

जो जागार तमृच : कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योका:॥

ऋग् 5/44/14

जो जागता है ऋचाएं उसे चाहती है जो जागता है साम अर्थात अनेक शान्तियां एवं उपासनाएं प्राप्त होती है। जो जाग जाता है अविद्यान्धकार से उठ खड़ा होता है, प्रभु, सर्वान्तर्यामी का उससे एकीकार हो जाता है। इस प्रकार जो अशांत संसार में आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक शांति का इच्छुक है उसे अपनी गहन निद्रा एवं तन्द्रा त्याग कर उठ खड़ा होना होगा। मनुष्य जागृत होकर जब इस संसार में कुछ कर दिखाने की ठान लेता है तो ही उसकी पहचान बनती है। तभी उसकी विश्व में ख्याति प्राप्त होती है और सभी की प्रशंसा का पात्र बनता है। इसी संदर्भ में एक नाम उभर कर आता है ''मूल शंकर''।

शिवरात्रि की रात तो सभी के लिए थी परन्तु वह रात्रि मूलशंकर के लिए बोध रात्रि बन गई। ऐसे शिव प्राप्ति का संकल्प लिया जो कल्याण मंगल स्वरूप एवं शान्ति का स्वरूप हो। वे सभी लोग जो उस बालक को जगाने को उत्सुक थे स्वयं ही सोए रहे। वह बालक उठ खड़ा हुआ उस सत्य शिव को पाने के लिए जिसके उपर चूहे न कूद सकें। उसे तलाश थी ऐसे शिव की जो ''शं कल्याण करोतीति शिव''। ज्ञान बोध होने पर वह सब मोह भंग कर ब्रह्मचर्य का व्रत ले घर से निकल पड़ा। मूलशंकर से शुद्ध चैतन्य और फिर सन्यासी दयानन्द सरस्वती। जहां दण्डी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से शिक्षा दीक्षा ले सन्यासी बना वहीं ज्वालानन्द पुरी और शिवानंद गिरी से योग शिक्षा प्राप्त की। दयानन्द ही के शब्दों में ''योग शिक्षा के विषय में उन दोनों साधुओं का विशेष रूप से ऋणी हूँ।'' अन्तत: वह मथुरा में दण्डी स्वामी विरजानन्द के पास पहुंचे। उस गुरू के सान्निध्य में 1860 से लेकर 1863 ई० तक शिक्षा प्राप्त की। पीछे चलकर उन्होंने जितने व्याख्यान दिए जितने ग्रंथ लिखे जितने शास्त्रार्थ किए वह सब इन तीन वर्षों के अध्ययन का ही परिणाम था। उन तीन वर्षों के अध्ययन ने उनके जीवन उनकी विचारधारा में जो क्रांति उत्पन्न कर दी उससे भारत के पिछले सौ वर्षों का इतिहास बन गया। गुरू दक्षिणा के समय दिए गए वचनों को एक साकार रूप दिया जिससे भारत में वह क्रांति आई जो अपने आप में अद्वितीय है। आर्य समाज स्थापित हुआ जिसने ऐसे क्रांतिकारी स्वतन्त्रता सेनानियों को जन्म दिया जिन्होंने देश को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व आहुत कर दिया।

इस क्रांति का मूल स्त्रोत उनके द्वारा रचित ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश है जो 1874 में लिखा गया। जिसे पं गुरूदत विद्यार्थी ने 14 बार पढ़कर कहा कि हर बार उन्हें इस ग्रंथ के अध्ययन से नया रत्न हाथ लगा। यह क्रांतिकारी ग्रंथ उस विलक्षण बुद्धि वाले विद्वान ने मात्र महीनों में लिखा जिसमें 377 ग्रंथों का हवाला है। इस ग्रंथ में 1542 वेदमंत्रों या श्लोकों का उद्धारण है जो चारों वेदों उपनिषदों छ दर्शनों, 18 स्मृतियों, पुराण, गृह्य सूत्र, जैन बौद्ध ग्रन्थ बाईबल कुरान आदि से सम्बन्धित है। सभी मंत्रों, श्लोकों के पूरे पते अंकित है और ग्रन्थ रचना का समय मात्र साढ़े तीन माह। यह एक ऐसा ग्रन्थ था जिसने नए सामाजिक दृष्टिकोण को जन्म दिया वही कार्ल मार्कस को ''दास कैपिटल'' लिखने में 34 वर्ष लगे थे, जो उस समय एक नवीन आर्थिक दृष्टिकोण के लिए जाना गया था।

उस महामानव विद्वान सन्यासी जिसे क्रान्तिदूत ही नहीं अपितु समग्र क्रान्ति दूत कहना उचित है को याद करें जिसने भारत की संस्कृति को पल्लवित किया। आडम्बरों पाखण्डों को निरस्त किया, भारत की धरोहर वेदों के वास्तविक रूप को उजागर किया। आइए एक-एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण पर चिन्तन करें।

1. महर्षि दयानन्द के अनुसार **समाज की रचना** जन्म के आधार पर नहीं अपितु कर्म के आधार पर होनी चाहिए। यह एक ऐसा क्रांतिकारी विचार था जिससे हमारी 90 प्रतिशत समस्याएं हल हो जाती है। एक ऐसे संगठन की विचारधारा जिसमें जन्म से न कोई नीचा हो न कोई उंचा। न जन्म से अमीर न गरीब जो कुछ भी हो कर्म आधारित। फिर कैसे कोई समस्या रहेगी ? इस सामाजिक क्रांति का श्रेय उस राष्ट्र उद्धारक ने वेदों के माध्यम से ही कि ब्राह्मण परमात्मा के मुख से शूद्र उसके पांव से उत्पन्न हुए। जैसे मुख बाहु नहीं बन सकता उसी प्रकार ब्राह्मण शूद्र और शूद्र ब्राह्मण नहीं बन सकता। परन्तु उनके द्वारा कर्म आधारित वैचारिक क्रांति ने जनमानस की मानसिकता को बदल कर रख दिया और इस क्रांति के परिणाम हमारे सामने है। जातिगत भेदभाव मिटाए जा रहे हैं।

2. गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली: जिसमें हमारे आप्त पुरूष मर्यादा पुरूषोतम राम, योगीराज कृष्ण जैसों ने शिक्षा ग्रहण की। वह शिक्षा प्रणाली जहां कृष्ण व सुदामा एक साथ पढ़े। उसी का अनुसरण किया स्वामी श्रद्धानंद ने जिन्होंने विश्व प्रसिद्ध गुरूकुल कांगडी की स्थापना की। उन्हीं के अनुयायी द्वारा डी.ए.वी. की स्थापना की जो आज उच्चतम शिक्षा संस्थान है। आज विश्व में आर्य समाज का नाम है तो इन संस्थाओं के कारण।

3. स्वराज्य का उद्घोष सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द द्वारा ही किया गया। लोकमान्य तिलक ने इसी का अनुसरण करते हुए कहा ''स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है''। दादा भाई नारौजी ने भी स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया। परन्तु इन से भी पहले स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के 8वें समुल्लास में लिखा था ''कोई कितना ही क्यूं न कहे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है''। 1874 का वह समय जब अंग्रेजों का राज्य था उस राज्य शासन में कोई व्यक्ति ऐसी निर्भीकता से स्वदेशीय राज्य का उद्घोष करे तो यह आश्चर्यजनक भी है और उस सन्यासी की निर्भीकता, साहस, निडरता एवं देशभक्ति का भी दर्शन करवाती है। परिणाम क्या हुआ ? आज भी कांग्रेस का इतिहास गवाह है कि जितने भी स्वतन्त्रता सेनानी हुए उनमें से 80-85 प्रतिशत आर्य समाज की विचारधारा से सम्बन्धित थे।

4. हिन्दू समाज की सबसे बड़ी समस्या थी नारी उत्थान। धर्म गुरूओं का उद्घोष था ''नारी नरकस्य द्वार'' ''स्त्री शुद्रौ नाधीयताम्''। जिस नारी ने जन्म दिया इन विद्वानों को मनीषियों को उन्हीं की माँ बेटी बहु को शिक्षित न होने का श्राप भी उन्हीं द्वारा प्रमाणित किया गया। धन्य है वह क्रांतिदूत देव दयानन्द जिन्होंने वेदों के माध्यम से प्रमाणित कर दिया कि सभी को अधिकार है शिक्षा ग्रहण करने का। फिर चाहे स्त्री शूद्र अथवा अनार्य स्वजन व परजन ही क्यों न हो।

यथेमां वाचम् कल्याणी-माव-दानि जनेभ्य:। ब्रह्म-राजन्याभ्यां
शुद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। (यजु 26/2)

आज उच्च से उच्च शिखर पर नारी शिक्षित होकर पदासीन है। यह उस सन्यासी के क्रांतिकारी कदम का परिणाम नहीं तो ओर क्या है ?

5. उस समय स्थिति ऐसी थी कि हर **संस्कृत वाक्य को वेद वाक्य** कहा जा रहा था। वेदों का उदाहरण देकर अर्थ से अनर्थ किए जा रहे थे। उन क्रान्तिकारी विचारों वाले देव दयानंद ने निश्चय कर लिया था कि वेदों को ही केन्द्र बनाकर हिन्दु समाज की रक्षा की जा सकती है। उन्होंने सुनिश्चित किया कि हर संस्कृत वाक्य वेद नहीं। उस महामानव की गर्जना थी कि तुम जो चाहो वह वेद नहीं, जो वेद है उसे ही मानना होगा। ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद् स्मृति पुराण सूत्रग्रंथ सब वेद नहीं। इन ग्रंथों में जो कुछ लिखा है अगर वह वेद विरुद्ध है तो वह त्याज्य है और

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

जीवन जीने की कला

नई दिल्ली में यमुना के किनारे श्री श्री रविशंकर द्वारा आयोजित विश्वस्तरीय भव्य समागम में भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जीवन के सम्बन्ध में और भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में जो विचार प्रस्तुत किए, उन विचारों को अपनाकर हम देश को सर्वोच्चता के शिखर तक ले जा सकते हैं। प्रधानमन्त्री जी ने उस समारोह में बोलते हुए कहा कि जब हम स्वयं अपने आपको कोसेंगे तो दूसरे भी हमें कोसने लगेगें। वास्तव में आज दुर्भाग्य से हमारे देश में यही हो रहा है। असहिष्णुता एवं अन्य बनावटी मुद्दों को आधार बनाकर अपने देश की छवि को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है कि हम वास्तव में असहिष्णु हो गए हैं। एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते हुए अपने राजनीतिक स्वार्थों को सिद्ध करने के लिए देश की छवि को दूसरे देशों के सामने गलत तरीके से प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि दूसरे देश के लोग भी हमारे देश में डरने लगे। दूसरों के सामने हम जब भी अपने आपको बुरा कहेंगे तो कोई भी हमें अच्छा नहीं कहेगा। जो हमारे देश के बारे में इस तरह की बातें सुनते होंगे उनके मन में भी हमारे प्रति घृणा पैदा होगी। इसलिए अपनी छवि हमें स्वयं बनानी होगी-

एक वो थे जिन्हें तस्वीर बनानी आती थी,
एक हम हैं जिन्होंने अपनी ही तस्वीर बिगाड़ डाली।।

आज वास्तव में हम जो कुछ कर रहे हैं उससे हम अपनी ही तस्वीर बिगाड़ रहे हैं। वास्तव में जीने की कला यही है कि हम अपने निजी स्वार्थों को त्याग कर देशहित के लिए कार्य करें। देश की एकता और अखण्ड़ता के लिए अपने-अपने मतभेदों को भूलकर राष्ट्र की छवि धूमिल न करें। एक राष्ट्र का हित करने वाली संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तुलना एक आतंकी संगठन आई.एस. आई. एस से करने वाले की मानसिक स्थिति किस प्रकार की हो सकती है इसका अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है। क्या राजनीति में इतनी हद तक गिर जाना चाहिए कि किसी के भी गुण और अच्छाईयों को न देखा जाए? क्या नेताओं का बौद्धिक स्तर इतना नीचा गिर गया है कि अपनी लीडरशिप को खुश करने के लिए किसी भी प्रकार के आधारहीन बयान देकर किसी पर कीचड़ उछाला जाए। ऐसी आधारहीन बयानबाजी से देश के अन्दर अशांन्ति फैलती है और उसका परिणाम पूरे देश को भुगतना पड़ता है। इसलिए वर्तमान में हमें ऐसी ताकतों से सावधान होने की आवश्यकता है जो देश की एकता और अखंड़ता के लिए खतरा है। अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर देश में जो वैर विद्वेष की भावना फैलाने का यत्न किया जा रहा है उसे किसी भी तरह से उचित नहीं ठहराया जा सकता। प्रधानमन्त्री जी ने कहा कि जब व्यक्ति किसी लक्ष्य व उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता है उसे जीवन जीने की कला कहा जा सकता है। बिना उद्देश्य एवं बिना लक्ष्य के जीना कला नहीं है। जैसे पशु- पक्षी बिना किसी उद्देश्य और लक्ष्य के खाते पीते हैं, अपना-अपना पेट भरते हैं और अपनी आयु का भोग करके इस संसार से चले जाते हैं। मनुष्य का जीवन तभी सफल होता है जब वह पशु भावना से ऊपर उठकर, अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर, अपने परिवार से निकल कर देश हित के लिए कोई कार्य करता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन सफल होता है। आज राष्ट्र को ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर देशहित के लिए कार्य करें। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दें। राजनीति के गिरते हुए स्तर को तभी सुधारा जा सकता है जब राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति जागरूक होगा।

माननीय प्रधानमन्त्री जी ने अपनी संस्कृति का गौरव गान करते हुए कहा कि हमारी संस्कृति विश्व की सबसे पुरातन संस्कृति है और हमें गौरव है कि हम उस संस्कृति और सभ्यता के अनुयायी हैं। जो लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता से घृणा करते हैं उनका एक दिन अवश्य पतन होता है। आज हमारे देश के लिए यह गौरव की बात है कि हमारे देश का प्रधानमन्त्री अपनी सभ्यता और संस्कृति के प्रेम करने वाला है और अपनी संस्कृति और सभ्यता को अपनाने में अपना गौरव समझता है। विश्व स्तर पर अगर कोई इस समय हमारे देश का नाम रोशन कर रहा है तो वो हमारे प्रधानमन्त्री जी हैं। इसलिए प्रत्येक राष्ट्रवासी का कर्त्तव्य है कि जो कार्य हमारे प्रधानमन्त्री जी कर रहे हैं उन कार्यों में हम भी अपना-अपना योगदान दें। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता कहावत के अनुसार अकेला व्यक्ति सम्पूर्ण राष्ट्र का सुधार नहीं कर सकता। जब राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक संगच्छध्वं-संवदध्वं की भावना के अनुसार मिलकर देश की उन्नति के लिए कार्य करेंगे तो अवश्य हमारा राष्ट्र अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर सकता है। राष्ट्र की उन्नति प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए। इसी लक्ष्य को केन्द्रित करके उसका जीवन होना चाहिए फिर उसे जीने की कला आएगी। जीवन जीने की कला उन लोगों के लिए है जो राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व त्यागने को तत्पर रहते हैं और राष्ट्र की एकता और अखण्ड़ता के लिए अपनी जान की बाजी तक लगा देते हैं। आज अगर हम आजाद भारत में जी रहे हैं तो इसके पीछे उन बलिदानियों का त्याग और बलिदान है जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने आपको आहूत किया था। उनके त्याग और बलिदान के कारण ही आज हम गुलामी की जंजीरों को तोड़कर खुली हवा में सांस ले रहे हैं। आजाद होते हुए भी आज हम असहिष्णुता का झूठा प्रचार करके अपने देश की गलत छवि पेश कर रहे हैं। कांग्रेस का कहना है कि हमारा इतिहास देश की आजादी के साथ जुड़ा हुआ है परन्तु वर्तमान में कांग्रेस जिस दिशा में जा रही है, उससे लगता है कि देश की बर्बादी का इतिहास भी इनके साथ लिखा जाएगा। इसलिए आज राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि देश को बर्बादी से बचाने के लिए जागरूक होने की आवश्यकता है। कहीं कुछ लोगों के स्वार्थ के कारण हम अपने राष्ट्र की एकता और अखण्ड़ता को न गवां बैठे, इससे सावधान होने की आवश्यकता है। जो कोई भी देश में रहकर देशविरोधी गतिविधियां करता है, अपने भाषणों के द्वारा अशान्ति फैलाता है ऐसे लोगों का और उनका साथ देने वाले सभी लोगों का बहिष्कार करना चाहिए। राष्ट्रद्रोह को न तो अभिव्यक्ति की आजादी कहा जा सकता है और न ही उसे किसी प्रकार से उचित ठहराया जा सकता है। इसलिए जीवन जीने का सही ढंग यही है कि अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए, राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य को समझते हुए राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज मोगा में विकास कार्य

पंजाब में पुराने आर्य समाजों में से एक आर्य समाज मोगा वेदप्रचार के कार्यक्रम, बच्चों को नि:शुल्क पुस्तक देने, योग कक्षा, नि:शुल्क पढ़ाई की व्यवस्था एवं निर्धन लड़कियों को नि:शुल्क कम्प्यूटर शिक्षा एवं अन्य अनेक विकास के कार्यक्रमों के संचालन के लिए स्थानाभाव की पूर्ति अर्थ सत्संग भवन के ऊपर नए हाल भवन का, नि:शुल्क कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान के लिए नए कमरों का निर्माण कार्य चल रहा है। जिसमें लगभग 15 लाख रु. तक धनराशि व्यय होने का अनुमान है। आर्य समाज के प्रचार की बढ़ती गतिविधियों को देखते हुए यह निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया है। भवन निर्माणार्थ इस यज्ञ में श्रीमती इन्दुपुरी एवं श्रीमती रामां सूद जी ने 3 लाख रु. स्त्री आर्य समाज की ओर से दान सहयोग प्रदान किये। इसमें आर्य समाज के सदस्यगण तन-मन-धन से भरपूर सहयोग कर रहे हैं। भविष्य में ये नये भवन, प्रसार-प्रचार के कार्यार्थ बहुत ही उपयोगी होंगे। **-नरेन्द्र सूद, प्रधान आर्यसमाज मोगा**

लुधियाना में महर्षि दयानन्द जन्मदिवस समारोह मनाया गया

लुधियाना जिला की समस्त आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं द्वारा महर्षि दयानन्द जी के 192 जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 3 मार्च को भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। यह शोभा यात्रा आर्य कालेज महिला विभाग सिविल लाईन्ज से प्रारम्भ होकर दण्डीस्वामी मन्दिर चौंक प्रिन्स होस्टल, कालेज रोड, फव्वारा चौक, पुरानी कचहरी से होती हुई वापिस उसी स्थान पर सम्पन्न हुई। शोभा यात्रा का नेतृत्व स्वामी सम्पूर्णानन्द जी व स्वामी विवेकानन्द और आर्य पुरोहित सभा के सदस्यों ने किया। शोभा यात्रा में आगे-आगे बैठे, ओ३म् ध्वज तथा सिर पर कलश उठाए 21 महिलाएं ऋषि गुणगान करते चल रही थीं। चारों वेदों का वेद-रथ एवं आर्यकन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणीयों द्वारा वैदिक मन्त्रों के उच्चारण से यज्ञ करना शोभा यात्रा के आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहा। भिन्न-भिन्न आर्य शिक्षण संस्थाओं के बच्चे एवं अध्यापक तथा आर्य समाजों के सदस्य अपने-अपने बैनर लिए, भजन गाते व जयघोष करते ट्रालियों में, कारो एवं पैदल चलते हुए अपनी उपस्थिति दर्शा रहे थे तथा ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त कर रहे थे। रास्ते में नगर वासियों, दुकानदारों, धार्मिक संस्थाओं के सदस्यों व अधि-कारियों द्वारा पुष्प वर्षा द्वारा शोभा यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। जगह-जगह पर श्रद्धालुओं द्वारा खाने-पीने की वस्तुएँ, मिठाई, फल-दूध इत्यादि वितरित की गई। कार्यकर्ताओं द्वारा इस यात्रा में स्वच्छ भारत मिशन का अनुसरण करते हुए, सफाई का विशेष ध्यान रखा गया और रास्ते में कहीं भी गन्दगी नहीं फैलाने दी। रास्ते में आयोजकों द्वारा लोगों को आर्य समाज की प्रचार सामग्री बाँटी गई। शोभा यात्रा के कुशल संचालन का कार्यभार श्री संजीव चड्डा, शशी सेठ, सुरिन्द्र टंडन, रमाकान्त महाजन तथा इन के साथियों ने संभाला।

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस का मुख्य समारोह 4 मार्च को दयानन्द मार्ग स्थित आर्य कालेज महिला विभाग के प्रांगण में सुसज्जित पंडाल में प्रात: 9 बजे से 1 बजे तक किया गया। मंच पर स्वामी सम्पूर्णानन्द जी तथा आर्य पुरोहित सभा के प्रधान पं० बालकृष्ण जी शास्त्री, महामंत्री पं० योगराज, पं० रमेश कुमार, पं० राजेन्द्र कुमार, पं० अर्जुनदेव तथा अन्य विद्वान शोभायमान थे। सर्वप्रथम सात कुण्डीय महायज्ञ प्रात: 9 बजे प्रारम्भ हुआ। श्रीमती राममूर्ति जी बांसल तथा उनके सुपुत्र श्री राकेश जैन व उनकी धर्म पत्नी ने गायत्री महायज्ञ की ज्योति प्रज्जवलित की। यज्ञ कुण्डों पर चारों ओर बैठे यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियाँ अर्पित की। हर चरण की समाप्ति पर पं० राजेन्द्र, और पं० योगराज जी ने भजन प्रस्तुत किया। सभी उपस्थित आर्यजनों ने पूर्णाहुति में भाग लिया। सभी को विद्वानों द्वारा आशीर्वाद दिया गया।

मंच का संचालन करते हुए डा० विजय सरीन ने महर्षि स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार शिवरात्रि की रात छोटी सी घटना से प्रेरित होकर वह महामानव बना और गुरूकृपा से संसार को वेदों के सत्य अर्थों को समझा कर अज्ञान और अविद्या को दूर किया। श्रीमती एवं श्री राजेश आर्य जी ने ओ३म् ध्वज फहराया। बठिण्डा से पधारे योगाचार्य श्री अरविंद जी तथा पठानकोट से पधारे श्री मोहन जी द्वारा योगासन व प्राणायाम का बहुत ही आकर्षक प्रदर्शन किया गया। बांसल परिवार एवं आर्य परिवार को क्रमश: ज्योति प्रज्जवलित व ध्वजारोहण करने पर स्वामी जी द्वारा सुन्दर स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। आर्य युवक सुमित टंडन जी को आर्य समाज के प्रति समर्पण भाव से प्रतिदिन व्हाट्सएप्य पर वैदिक विनय का मन्त्र अर्थ सहित लिखने के लिए स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य संदेश पूज्य स्वामी सम्पूर्णानन्द जी द्वारा प्रवचन रूप में दिया गया। जिसमें उन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित धर्म का वास्तविक स्वरूप : सत्य अनुकूल, न्याय अनुकूल, वेदानुसार पक्षपात रहित आचरण बतलाया। वेद मानव-मानव में कोई भेद नहीं करता। वेद सभी को मनुष्य बनने के लिए आदेश देता है ताकि वह मनन करता हुआ, उपकार व सेवा के द्वारा दूसरों के दु:ख दूर करें। उन्होंने प्रवचन में आगे बतलाया कि महर्षि दयानन्द जी ने नारी सम्मान, नारी शिक्षा दलितोद्धार तथा स्वराज के लिए अनथक प्रयत्न किए। वर्तमान में नारी जाति जिन उच्च स्थानों पर आसीन है यह उन्हीं की कृपा से हैं। आर्यसमाज के साथ जुड़ने के लिए उन्होंने आह्वान किया क्योंकि आर्य समाज ही ऐसी संस्था है जो वेदानुसार जीवन शैली का पक्षधर है।

यह महोत्सव महात्मा सत्यानंद जी के संरक्षण में किया गया। उनकी ओर से डा० विजय सरीन जी ने मुख्य समारोह का प्रबन्ध श्री जगजीव बस्सी, विजय गांधी, पदम औल, अतुल मेहता, अरुण थापर वा डा० सुमन शारदा जी ने किया। महोत्सव की सफलता के लिए परमपिता के धन्यवाद के पश्चात् स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, पुरोहित वर्ग, आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं, दयानन्द मैडीकल कालेज एवं अस्पताल, आर्य वीर दल, लुधियाना प्रशासनिक विभाग, आर्य कालेज प्रबन्धकर्त्ती समिति, प्रिंसीपल तथा प्रभारी महिला विभाग एवं स्टॉफ का धन्यवाद किया। अन्त में सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया तथा परिसर के मुख्य द्वार पर भी लंगर बाँटा गया। इस दिन महोत्सव स्थल, आर्यसमाजों व शिक्षण संस्थाओं के भवनों के अतिरिक्त आर्य परिवारों के घरों पर सजावटी लाइटों द्वारा रोशनी की गई।

इस समारोह में श्रीमती राजेश शर्मा, विनोद गांधी, जनकरानी, नीलम थापर, अंजु चड्डा, उमा शर्मा, अनु गुप्ता, सीमा चड्डा, किरण टंडन, ऊषा कालड़ा, इन्द्रा शर्मा, राजेन्द्र बेरी, बृजमोहन अरोड़ा, सन्त कुमार, रमेश कौड़ा, महिन्द्र प्रताप, गरीब दास, विनोद सूद, रमेश सूद, हर्ष आर्य, श्रवण बत्तरा, जनक भगत, संजय विरमानी, बृजेश पुरी, अनिल कुमार, अजय बत्तरा, प्रिं. विजयपाल दयौड़ा, ज्योति किरण जोशी, सुनीता मलिक, सूक्ष्म वालिया, राजेश मरवाहा, राजेन्द्र बत्तरा, मंगतराय मेहता, मोहनलाल कालड़ा, आर. बी. खन्ना, रेणू शर्मा, राकेश अरोड़ा, पं० कर्मवीर, राजेन्द्र व्रत, अशोक कुमार, नरेन्द्र कुमार, महेश कुमार, मास्टर अनिल, श्री अमरनाथ टागरा, अमरेश कुमार, अनिल गौतम, डा० सिंगला, सुरेश चड्डा, सुभाष अबरोल, अतुल धवन, राम कुमार, सुरेश मुंजाल, आत्म प्रकाश, जगदीश नारंग, सिद्धार्थ अबरोल, मोहित महाजन आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

-संजीव कुमार चड्ढा

आर्य समाज बरनाला में ऋषि-बोधोत्सव सम्पन्न

दिनांक : 06.03.2016 को आर्य समाज मंदिर बरनाला में ऋषि-बोधोत्सव श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इसमें बरनाला की सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं की शमूलियत से 6 मार्च प्रात: 9 बजे से 11.30 बजे तक यज्ञ, भजन एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर चर्चा की गई। इसमें मुख्य यज्ञमान के रूप में सपत्नी श्री सुखविन्दर लाल मारकण्डा जी ने पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री के दिशा-निर्देश में आहुतियाँ प्रदान की। श्री शिव कुमार बत्ता, श्री राम चन्द्र आर्य, गाँधी आर्य हाई स्कूल का छात्र-सूरज कुमार तथा श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज की छात्राओं में संगीतमय सुमधुर अवसर अनुकूल भजन प्रस्तुत किए। श्री राम शरण दास गोयल, श्री राम कुमार सोबती श्रीमती अनीता मित्तल, श्री हरमेल सिंह जोशी जी ने अपना वक्तव्य प्रदान करते हुए महर्षि दयानन्द के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करते हुए बाह्य आडम्बर को त्याग कर वैदिक धर्म को अपने व्यवहारिक जीवन में कार्यान्वित करने की प्रेरणा दी। अंत में डॉ० सूर्यकान्त शोरी ने आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद करते हुए असत्य मार्ग को त्याग कर सत्य मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी। इस कार्यक्रम से पूर्व दिनांक 4 मार्च को आर्य कॉलेज एवं आर्य संस्थाओं में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस यज्ञ एवं प्रजन के द्वारा मनाया गया था। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-तिलकराम, मंत्री आर्य समाज, बरनाला

आर्य समाज ने मनाया ऋषि बोधोत्सव

दयानन्द सरस्वती महान समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज को अन्धविश्वास कुरीतियां एवं पाखण्ड के बंधन से मुक्ति दिलवाई। उक्त विचार ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने व्यक्त किये।

शिवरात्री के अवसर पर आर्यसमाज विज्ञाननगर में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि शिवरात्री के अवसर पर हुए आत्मबोध ने ही बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द सरस्वती बनाया। शिवरात्री को घटी घटना से उन्हें परमात्मा के सत्य स्वरूप को जानने की प्रेरणा मिली।

इस अवसर पर डी ए वी के धर्म शिक्षक पं. शोभाराम आर्य ने किहा कि महर्षि दयानन्द ने वेदों का भाष्य कर मानवता के लिए महान कार्य किया है। स्वामी दयानन्द ने विधवा विवाह, बाल विवाह रोकथाम आदि अनेक कार्य किये।

इससे पूर्व कार्यक्रम का प्रारंभ आचार्य अग्निमित्र के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ में उपस्थित यजमानों ने वेदमंत्रों के साथ आहुतियां दी।

यज्ञ के उपरान्त मुख्य कार्यक्रम में श्रीमती उषा भटनागर श्रीमती मानकंवर बल्दुआ एवं श्रीमती सुमनबाला सक्सेना ने महर्षि दयानन्द के जीवन एवं कार्यों से सम्बंधित भजन प्रस्तुत किये। इसी क्रम में चन्द्रप्रकाश भारद्वाज, मानसी चढ्डा ने रोचक भजन प्रस्तुत किया।

आर्यपुत्री विभूति वासुदेव ने प्रभुभक्ति का भजन सुनाकर सभी को भावविभोर कर दिया।

इस अवसर पर कोटा नगर की विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी, सदस्य एवं पतंजलि योग समिति के पदाधिकारी, सदस्य एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

आर्यसमाज विज्ञाननगर के प्रधान जे. एस. दुबे ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी आगंतुक महानुभावों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री राकेश चढ्डा ने किया।

-राकेश चढ्डा मंत्री, आर्यसमाज विज्ञाननगर

आर्य समाज धूरी में ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज धूरी में ऋषिबोधोत्सव (महाशिवरात्री का पर्व प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महाशय प्रतिज्ञापाल जी की अध्यक्षता में एवं आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद आर्य की अगुवाई में बड़े धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर सबसे पहले पं० शैलेश कुमार शास्त्री जी ने विशेष यज्ञ करवाया जिसमें यज्ञ के मुख्य यजमान प्रधान प्रहलाद आर्य कृष्णा आर्य एवं आर्य स्कूल के सभी अध्यापक अधियापिका तथा आर्य समाज के सभी अधिकारीगण इस यज्ञ में उपस्थित महानुभावों ने आहुतियां डाल कर विश्व-शान्ति के लिए प्रार्थना की। यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज के तीनों शिक्षण संस्थाओं के छात्र छात्राओं ने सांस्कृतिक, कार्यक्रम, भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के महामंत्री राम पाल आर्य ने बहुत ही अच्छे ढंग से किया। आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद आर्य ने उद्बोधन करते हुए कहा कि आर्य श्रेष्ठ पुरुष को कहते है शिव कल्याण चाहने वालो को कहते हैं।

इस शिवरात्री के एवं ऋषि बोधोत्सव पर आर्य स्कूल, आर्य कालेज, एवं यश चौधरी मॉडल हाई स्कूल के छात्र-छात्राओं एवं सभी अध्यापक-अधियापिका ने बड़े हर्ष और उल्लास के साथ कार्यक्रम में भाग लिया तथा आर्य समाज के सभी अधिकारी एवं सदस्य भी उपस्थित हुए। वासुदेव आर्य, सोम प्रकाश आर्य, सतीश आर्य, राजीव मोहित रमेश आर्य, पवन कुमार गर्ग, अशोक गर्ग, अशोक जिन्दल जी आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष विवेक जिन्दल, आर. पी. शर्मा, विकास शर्मा, राजेश आर्य, डा० रामलाल आर्य, डा० सुरजीत सरीन कर्मचन्द जिन्दल कृष्णा आर्य, उर्मिला आर्या, दर्शना आर्य तथा तीनों शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसिपल बी. एल कालीया, धर्मदेव हुमन, मोनिका वाटस्, एवं सभी अधिकारीगण इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए। **-प्रहलाद आर्य प्रधान**

वेद मन्दिर अवांखा का कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 28 फरवरी 2016 दिन रविवार को वेद मन्दिर अवाँखा (दीनानगर) में पं० राम भज दत्त चौधरी जी का 150वाँ जन्मदिवस बहुत ही श्रद्धापूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में पहले प्रभातफेरियाँ निकाली गई और शनिवार 27-02-2016 को आर्य समाज मन्दिर मेन बाजार दीनानगर के प्रधान श्री रघुनाथ जी शास्त्री की अध्यक्षता में नगर परिक्रमा निकाली गई, जिसने भव्य शोभायात्रा का रूप धारण कर लिया, क्षेत्र विधायक, श्रीमति अरूणा चौधरी एवं श्री अशोक चौधरी जी ने परिवार व क्षेत्रीय लोगों के साथ शोभायात्रा का स्वागत किया तथा वह अन्त में शोभायात्रा में सबके साथ कदम से कदम मिलाकर चलते रहे जिससे संगत में एक उत्साह की भावना पैदा हुई और ओ३म् ध्वज को लहराते हुए सभी ने अपना योगदान दिया।

28-02-2016 दिन रविवार के अध्यक्ष ''बाबू सरदारी लाल जी आर्यरत्न जी'' (वरिष्ठ अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) की अध्यक्षता में सारा कार्यक्रम श्रद्धापूर्वक सम्पन्न हुआ प्रातः सर्वप्रथम श्री जितेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया जिसमें सभी ने पवित्र हवनकुण्ड में आहुतियां वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ डाली, यज्ञोपरांत श्री राम सरूप जी कलारिया जोनल मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक) जी ने ओ३म् ध्वज को फहराकर ध्वजारोहण का दायित्व निभाया उन्होंने ध्वज संदेश में सभी को स्वामी दयानन्द जी के पदचिन्हों पर चलने की अपील की। तदोपरांत प्रातः राश के पश्चात आर्य सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें मुख्यातिथि श्रीमति अरूणा चौधरी विधायक हो श्रीमति सीमा देवी विधायक मौआ श्री रमन बहल गुरदासपुर श्री अशोक चौधरी पूर्व विधायक राम लाल, माता जगदीश रानी जी आर्य अमृतसर श्री प्रेम सागर चीफइन्जीयर पटियाला रिटायर्ड श्री कमल किशोर जी जालन्धर विशेष अतिथि के रूप में पधारकर अपने आर्य विचार रखे। महाशय जगदीश मित्र महाजन प्रधान आर्य समाज धारीवाल को विशेष रूप से उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। आर्य महासम्मेलन में पं० राम भज दत्त चौधरी जी के परिवार वालों ने विशेष रूप से शामिल होकर समारोह की शोभा बढ़ाई सभी वैदिक प्रवक्ताओं ने पं० जी के बारे में उनकी विशेषताएँ बताकर सभी को उनके विचारों की जानकारी दी सम्मेलन में दयानन्द मठ दीनानगर का विशेष योगदान रहा, जिसमें शोभायात्रा तथा सम्मेलन में सभी ब्रह्मचारियों का शामिल आर्यसमाज भार्गव नगर जालन्धर, आर्य समाज दीनानगर, कादियाँ नवांकोट अमृतसर, हरिपूरा अमृतसर, इन्द्राकालोनी अमृतसर, रमदाल, मुकेरियाँ, गुरदासपुर धारीवाल, आर्य समाज नरोट ने अपने साथियों सहित भाग लिया क्षेत्र के साथ लगते गाँवों में यहाँ वैदिक प्रचार का दायित्व वेद मन्दिर ने संभाल रखा है उन्होंने बढ़चढ़कर भाग लेकर समारोह को मेले का रूप दे दिया सभी आए हुए मेहमानों का स्मृति चिन्ह सत्यार्थ प्रकाश सिरोपे और शाल आदि देकर सम्मानित किया गया अन्त में बाबु सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने सभी को समारोह की सफलता पर बधाई दी तथा आर्य समाज के सभी युवकों बच्चों की आने की प्रेणा के साथ भावना अध्यक्षीय भाषण, पं० सत्य पाल जी ''निक्षक'' के निर्वाण दिवस पर उन्हें श्रदांजलि दी हिमाचल प्रदेश से पधारे स्वामी संतोषानंद जी ने सभी को आशीर्वाद वचनों से निहाल किया।

प्रधान श्री तीर्थ राम जी ने आये हुए मेहमानों व संगत का समारोह की सफलतापूर्वक समापन पर सभी को धन्यवाद किया। पं० अरूण जी संगीत रत्न भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पं० वेदव्रत शास्त्री, पं० राम निवास शास्त्री, पं० हितेश जी का भी उन्होंने ने विशेष रूप से धन्यवाद किया।-**विजय कुमार शास्त्री मंत्री**

आर्य मुसाफिर पं. लेखराम जी का शहीदी समारोह सम्पन्न

पं. लेखराम स्मारक मंड़ल कादियां में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वार्षिक उत्सव के रूप में 1 मार्च से 6 मार्च 2016 तक धर्मवीर पं. लेखराम जी का शहीदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सुरेश शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। दयानन्द मठ दीनानगर के ब्रह्मचारियों द्वारा वेदपाठ किया गया। यज्ञ का संयोजन पं. ओंकार नाथ शास्त्री पुरोहित स्मारक मंडल कादियां ने किया। प्रतिदिन भारी संख्या में लोगों ने यजमान बनकर यज्ञ में आहुतियां डाली। इसी दौरान 4 मार्च को महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस मनाया गया जिसमें आर्य महिला कॉलेज के स्टॉफ एवं छात्राओं ने यजमान बनकर भाग लिया। प्रतिदिन रात्रिकालीन सत्संग में श्री सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन जी के भजन तथा आचार्य सुरेश शास्त्री जी के प्रवचन होते रहे।

मुख्य कार्यक्रम दिनांक 6 मार्च 2016 रविवार को प्रात: यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ शुरू हुआ। सप्ताह भर बनने वाले सभी यजमानों ने अन्तिम दिन यजमान बनकर यज्ञ को सम्पन्न किया। यज्ञ के ब्रह्मा तथा अन्य विद्वानों के द्वारा सभी यजमानों का आशीर्वाद दिया गया। इसके पश्चात ध्वजारोहण स्वामी सदानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर एवं स्मारक मंडल के वरिष्ठ सदस्य एवं संरक्षक श्री जितेन्द्र अबरोल (काकेशाह) के करकमलों द्वारा किया गया। तत्पश्चात शहीदी सम्मेलन श्री जगदीश मित्र जी की अध्यक्षता में शुरू हुआ। इस अवसर पर आर्य कॉलेज की छात्राओं तथा भिन्न-भिन्न स्कूलों से आए बच्चों द्वारा भजन गाए गए। सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन जी ने प्रभु भक्ति तथा देशभक्ति के भजनों के द्वारा उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। आचार्य सुरेश शास्त्री जी ने पं. लेखराम जी को अपनी श्रद्धाजंलि देते हुए कहा कि पं. लेखराम जी का शहीदी दिवस मनाना तब सार्थक होगा जब हम उनके द्वारा बताए गए तहरीर और तकरीर के कार्य को आगे बढ़ाएंगे। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति स्वयं के लिए जीता है उसका एक दिन मरण होता है और जो इन्सान दूसरों के लिए जीता है उसका हमेशा स्मरण होता है। श्री जगदीश मित्र ने अपने अध्यक्षीय भाषण में पं. लेखराम जी को अपनी हार्दिक श्रद्धाजंलि प्रस्तुत की। पं. लेखराम स्मारक मंड़ल कादियां के महामन्त्री श्री रमेश भण्ड़ारी ने मंच संचालन करते हुए कार्यक्रम को विधिवत सम्पन्न किया। स्मारक मंडल के प्रधान श्री सुभाष अबरोल, कोषाध्यक्ष श्री बलदेव राज, पुरोहित ओंकार नाथ शास्त्री तथा स्मारक मंडल के अन्य सदस्यों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। इस अवसर पर गुरदासपुर, बटाला, दीनानगर, पठानकोट, धारीवाल आदि भिन्न-भिन्न स्थानों से भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ तथा इसके पश्चात अटूट ऋषि लंगर चलता रहा।

-रमेश भण्डारी महामन्त्री स्मारक मंड़ल कादियां

ऋषि बोधोत्सव पर्व मनाया गया

महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन्न मोहल्ला जालन्धर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस एवं ऋषि बोधोत्सव का पर्व दिनांक 7 मार्च 2016 को धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया। पं. ओम प्रकाश शास्त्री जी ने सभी यजमानों से आहुतियां डलवाई। श्री राजेश अमर प्रेमी तथा श्रीमती सीमा अनमोल ने महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित भजन सुनाकर सभी को भावविभोर कर दिया। इस अवसर पर आचार्य सुरेश शास्त्री जी ने ऋषि दयानन्द के बोधोत्सव की महत्ता पर प्रकाश ड़ाला और कहा कि आज वर्तमान में समाज में फैल रही बुराईयों के प्रति जागरूक होने के लिए फिर से बोध प्राप्त करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर सर्वश्री रवि मित्तल, सत्यशरण गुप्ता, अरूण कोहली, राजेन्द्र विज, मदन लाल कालड़ा, प्रिं. ऐ. जे. बहल, सुदेश मित्तल,मोहन लाल, आर. के. अरोड़ा, रमेश कालड़ा आदि अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

-कुन्दन लाल अग्रवाल प्रधान प्रबन्धक समिति

पृष्ठ 2 का शेष-क्रांतिदूत सन्यासी.....

यदि वह वेदानुकूल है तो ग्राह्य है। वेद के शब्द रूढ़ी नहीं यौगिक है। यही विचार निरूक्तकार के थे। यही विचार ऋषिमुनियों के थे। वेदों में कहीं इतिहास नहीं है। उस समय के सायण महीधर उव्वट आदि भाष्यकारों को चुनौती देना एक बहुत साहसी व उचित क्रांतिकारी विचार था जिसने वास्तविक वेदों का स्वरूप प्रकट कर भारतीय तो क्या पाश्चात्य विद्वानों को भी आचम्भित कर दिया।

एक ईश्वरवाद के स्थान पर बहुदेवतावाद का प्रचलन था। भाष्यकारों ने प्रचार कर रखा था कि वेदों के देवता अग्नि वायु इन्द्र आदि स्वर्ग से पधारते है। यजमान से दान दक्षिणा लेकर उन्हें आर्शीवाद देकर स्वर्ग चले जाते है। पाश्चात्य विद्वान तो चाहते ही यही थे ताकि वे सिद्ध कर सके कि वैदिक ऋषि तो जंगली थे और भय के कारण भिन्न-भिन्न देवताओं की पूजा करते थे। परन्तु दयानन्द ने वेद मंत्रों से ही प्रमाणित कर दिखाया कि अग्नि वायु इन्द्र आदि नाम देवताओं के नहीं अपितु उस ही परमेश्वर के गुणात्मक नाम है।

''एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति अग्नि यमं मातरिश्वान माह''

ऋग् 1/164/46

इन्द्र का आधिभौतिक अर्थ अग्नि विद्युत व सूर्य है। आधि-दैविक में वह राजा सेनापति व अध्यापक आदि है और अध्यात्म में वह जीवात्मा एवं परमात्मा अर्थ में है। इसी प्रकार ''त्रयायुष जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषम'' (यजु 3/62) इस मंत्र में जमदग्नि और कश्यप नाम देहधारी मनुष्यों के नहीं अपितु जमदग्नि का अर्थ चक्षु और कश्यप का अर्थ प्राण है। यहां प्राण से अन्त:करण और चक्षु से सब इन्द्रियों को ग्रहण करना है। यही विलक्षणता थी उनके वेद भाष्य की। यही था एक ईश्वरवाद स्थापित करने का दृढ़ निश्चय वैदिक सिद्धान्त समझाने का क्रांतिकारी कदम।

7. उन्होंने मूर्ति पूजा का विरोध तो किया किन्तु मन्दिरों से मूर्तियों को उखाड़ नहीं फैंका। हां उखाड़ फैंका उन मूर्तियों को मानवों के मन मन्दिरों से-एक वैचारिक क्रांति द्वारा। उस क्रान्ति का प्रभाव सबसे अधिक बौद्धिकवर्ग पर पड़ा। राष्ट्रीय कवि ''दिनकर'' के शब्दों में ''दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक केवल सुधारक मात्र थे, किन्तु दयानन्द क्रांति के वेद से आए। उनकी कार्यशैली 19वीं तथा 20वीं शताब्दी के सुधारकों से सर्वथा भिन्न थी''।

8. हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकारते हुए उन्होंने अपने सभी ग्रन्थ संस्कृत एवं हिन्दी में लिखे। व्याख्यान भी हिन्दी में दिए। स्वयं गुजराती होते हुए गुजराती एवं संस्कृत के विद्वान होने पर भी उन्होंने हिन्दी को उच्चतम स्थान दिया। यह अपने आपमें एक अभूतपूर्व क्रांतिकारी कदम था। वेद भाष्य को हिन्दी में प्रस्तुत करना और जन साधारण की पहुंच तक वेदों को प्रतिष्ठित करना वास्तव में सराहनीय एवं प्रसंसनीय क्रांति थी।

धन्य है वह ऋषि जिसने सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, मानवीय एवं राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। आज भले ही सरकारें उस महापुरूष के नाम को महत्त्व ना दे रही हो लेकिन उनकी विचारधारा के अनुरूप ही समाज सुधार में जुटी है। सामाजिक व्यवस्था, स्वराज्य स्थापना, जात पात का भेंद भाव विधवा विवाह बाल विवाह, सती प्रथा, शिक्षवा का आधार सभी को दलितोद्धार, नारी शिक्षा, वेदों को प्राचीनतम रचना की स्वीकार्यता। ये सभी उस क्रांतिकारी सन्यासी के क्रांतिकारी प्रयास रहे हैं जिन्हें आज हम देश में स्वीकार कर रहे हैं। धन्य है वह ऋषि जिसने हमें शान से जीना सिखाया।

ऋषि बोधोत्सव पर्व मनाया गया

केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर के तत्वावधान में 7 मार्च 2016 सोमवार को महाशिवरात्रि का पर्व ऋषि बोधोत्सव पर्व के उपलक्ष्य में बड़े उत्साह और हर्षोल्लास से आर्य सम्मेलन के रूप में आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर में मनाया गया। हवन यज्ञ प्रात: 9:00 बजे हुआ। 10:30 से 12:30 बजे तक भजन व प्रवचन हुए। इसके पश्चात ऋषि लंगर लगाया गया।

-राकेश मैहरा महामंत्री

त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल 42, शंकर घोष लेन, कोलकाता-6 का त्रैवार्षिक साधरण अधिवेशन-निर्वाचन रविवार दिनांक 21 फरवरी 2016 को सौहार्दपूर्ण वातावरण में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें श्री दीनदयाल गुप्त सभा प्रधान, श्री प्रशान्त सरकार सभा मन्त्री तथा अन्य 29 आर्यजन प्रान्त के सभी स्थानों से सभा के पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए। सभा में देश की वर्तमान परिस्थिति जाति के आधार पर आरक्षण तथा जे.एन. यू. जैसी शिक्षण संस्था में देशद्रोह की पनपती भावनाओं की निन्दा की गई। सभा ने आगामी योजना के अन्तर्गत चारों वेदों का बंगला भाषा के भाष्य तथा प्रचार-प्रचार की रूपरेखा तैयार की है। नवनिर्वाचित अन्तरंग सभा में बंगला भाषी विद्वानों-आर्यजनों के समावेश को प्राथमिकता दी गई।

-सत्येन्द्र कुमार सिंह संयुक्त मन्त्री

ऋषि बोधोत्सव मनाया गया

आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस एवं बोधोत्सव पर्व मनाया गया। इन दोनों अवसरों पर हवन यज्ञ किया गया एवं स्वामी जी द्वारा दिए गए उपदेशों पर विचार किया गया और रात को आर्य समाज भवन को दीपमाला से सुसज्जित किया गया।

-भारत भूषण नन्दा प्रधान

74 वां वार्षिक महोत्सव

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का 74 वां वार्षिक महोत्सव दिनांक 28 मार्च 2016 सोमवार से रविवार 3 अप्रैल 2016 रविवार तक मनाया जा रहा है। इस उत्सव में आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं। **-रवि वासुदेवा मन्त्री**

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव मनाया

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव 4 मार्च को, पं. लेखराम जी का शहीदी दिवस 6 मार्च को एवं बोधोत्सव दिनांक 7 मार्च को मनाया गया। ये तीनों पर्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इन पावन पर्वों पर आचार्य रमेश शास्त्री जी द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन किया गया। श्री अरूण शुक्ला जी ने ऋषि दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित भजन गाए।

-रवि वासुदेवा मन्त्री आर्य समाज

ऋषि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस मनाया

आर्य गर्ल्ज सी० सै० स्कूल बठिण्डा के प्रांगण में आज दिनाँक 4-03-2016 को प्रात: 9:00 बजे महर्षि दयानन्द जी का जन्मदिवस मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल, मैनेजर श्री निहाल चन्द सचदेवा, श्री सुरिन्द्र गर्ग, प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता, स्टॉफ एवम् बच्चे शामिल हुए। स्कूल के प्रधान जी, मैनेजर जी एवम् प्रिंसीपल जी ने स्वामी जी के जन्म दिवस पर सबको बधाई दी। उन्होंने बच्चों को स्वामी जी के जन्मदिवस के बारे में बताया और उनके बनाए हुए नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि सच्चाई का मार्ग कठिन है परन्तु प्रशंसनीय है। इसलिए सत्य के मार्ग पर चलते हुए घबराना नहीं चाहिए। मैडम श्रीमती चन्द्रकांता जी ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने अपनी छोटी उमर में ही घर बार छोड़ कर समाज की भलाई के लिए कार्य किया। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना के बारे में प्रकाश डाला। बच्ची नाजिया ने अपनी मधुर आवाज़ में भजन गाया। प्रिया और सपना ने आर्य समाज के नियमों को सुनाया। स्वामी जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में स्कूल इमारत को बिजली की लड़ियों में सजाया गया। स्कूल के प्रधान श्री अनिल अगहाल जी की तरफ से प्राईमरी कक्षाओं के लिए आर. ओ. लगवाया गया। अंत में बच्चों को प्रसाद बाँटा गया।

स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिवस मनाया

तिथि 14-2-2016 को आर्य समाज मन्दिर गुरदासपुर में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस बड़ी श्रद्धा से श्री गुरवचन आर्य की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह में दयानन्द मठ दीना नगर के शास्त्री श्री जतेन्द्र जी और ब्रह्मचारियों को विशेष तौर पर बुलाया गया। श्री जतेन्द्र शास्त्री जी ने आए हुए श्रोतागणो को स्वामी जी की कई घटनाएं सुनाई और जोर देकर कहा कि आर्य समाज कोई धर्म नहीं यह श्रेष्ठ लोगों का एक समूह है जो पाखण्डवाद का विरोध करता है। उन्होंने स्वामी जी को एक सही मार्ग दर्शक बताया और लोगों को सही मार्ग अपनाने में वेदों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया। आए हुए श्रोताओं से विनती की कि यह लोग जो लोगों में झूठा, भ्रम फैला कर कहते है कि हम ईश्वर के दर्शन चन्द मिन्टों में ही करवा देते है उन से बचने की जरूरत है शास्त्री जी ने कहा कि हमें अच्छे बुरे कर्मों का फल भोगना होगा इसलिए स्वामी दयानन्द के बताए हुए मार्ग पर चल कर और जो दस नियम उन द्वारा बनाए गए है उन का सही रूप से अनुसरण करें इसी में आप सब की भलाई है। प्रधान श्री गुर वचन आर्य ने सब श्रोताओं और मठ से पधारे शास्त्री जी और ब्रह्मचारियों का धन्यवाद किया।

-गुरबचन आर्य प्रधान

जवाहर नगर लुधियाना में ऋषि बोधोत्सव मनाया

दिनांक 06 मार्च 2016 को महर्षि दयानन्द जी के बोधोत्सव के उपलक्ष्य में प्रात: 8:00 बजे से 10:00 बजे तक आर्य समाज मन्दिर, जवाहर नगर लुधियाना में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सर्वप्रथम बृहद् यज्ञ किया गया जिसे श्रीमती ममता शर्मा जी ने सम्पन्न करवाया। सभी ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहूतियां अर्पित की। आर्य समाज के महामंत्री श्री अनिल कुमार जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित भजन "हमें ज्ञान की रौशनी देने वाले नमन है तुझे भी ऋषि वेदों वाले" सुनाया तथा श्रीमती वीना गुलाटी; श्री हरबन्स लाल सहगल ने प्रभु भक्ति के भजन प्रस्तुत किये। आर्य समाज के प्रधान श्री विजय जी सरीन ने महर्षि दयानन्द के बोध पर विचार प्रकट करते हुए बतलाया कि शिवरात्रि की रात की घटना जिसमें एक चूहा शिवलिंग पर चढ़े प्रसाद को खा रहा था को देख बालक मूलशंकर के मस्तिष्क में खलबली मच गई कि यह मूर्ति सच्चा शिव कैसे हो सकती है। कुछ वर्ष बाद उनकी प्रिय छोटी बहन एवं चाचा की मृत्यु को देखकर उनके मन में मृत्यु एवं सच्चे शिव की खोज के लिये तीव्र इच्छा ने उनको घर छोड़ने के लिये बाह्य कर दिया और वो घर से निकल पड़े। अनेक वर्षों तक इधर-उधर भटकने के पश्चात वह सच्चे गुरू एवं व्यकरण के सूर्य स्वामी विरजानन्द जी के पास पहुँचे जहाँ उनके सारे संशयों का निराकरण हुआ। सच्चे गुरू से शिक्षा प्राप्त कर संसार के लोगों के वेदों के मंत्रों के सत्य अर्थों को समझाया और धर्म का वास्तिवक स्वरूप बतलाया। वैदिक धर्म मानवता में किसी प्रकार का भेद नहीं करता व सभी को एक ईश्वर की संतान मानता है। वेदज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने के लिये उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। वर्तमान समाज में व्याप्त जात-पात, मत मतान्तरों के झगड़े केवल मात्र वेद की शिक्षाओं पर चल कर ही समाप्त हो सकते है। अत: आज के दिन हम सबको संकल्प लेना होगा कि हम ऋषि दयानन्द के द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धांतों पर स्वयं भी चलने तथा औरों को भी उसके लिये प्रेरित करते। 6-7 मार्च को मन्दिर भवन पर लाईटें लगाकर रौशनी की गई।

-अनिल कुमार

वर चाहिए

25 वर्ष, 5'-2" बी टैक (कम्प्यूटर साइंस), एम बी ए (इनफोर्मेशन सिस्टम) राजावत क्षत्रिय झांसी (उत्तर प्रदेश) के आर्य परिवार की सुन्दर, सौम्य, धार्मिक, सरल, मंगली कन्या के लिये सुयोग्य वर के प्रस्ताव आमंत्रित (जाति बन्धन नहीं)

संपर्क-: 9452906568, jaswantthakur2401@gmail.com

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी शिवरात्रि पर्व ऋषि बोधोत्सव के रूप में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। पहले 29 फरवरी से 5 मार्च 2016 तक वेदों की कथा श्री विजय शास्त्री जी द्वारा की गई तथा भजन श्री संदीप आर्य भजन मण्ड़ली द्वारा गाए गए। लगातार 6 दिन चले वेद प्रवाह से इलाका निवासियों ने भरपूर लाभ उठाया।

6 मार्च को सुबह 10 बजे ब्रह्मा श्री मनोहर लाल आर्य तथा श्री विजय कुमार शास्त्री द्वारा विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न करवाया गया। यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण श्री रवि मित्तल जी द्वारा किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी की अध्यक्षता में आर्य महासम्मेलन शुरू हुआ। इस महासम्मेलन में श्री अशोक परूथी, श्री विजय शास्त्री, श्री बनारसी लाल अमृतसर, श्रीमती कर्मजीत कौर पत्नी सांसद संतोख सिंह, श्री सरदारी लाल और प्रेम भारद्वाज जी ने अपने-अपने विचार रख के इस सम्मेलन को सफल किया। उसके बाद शोभायात्रा का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया जिसमें विभिन्न प्रकार की झांकियां बैंड़ बाजे, ढोल नगाड़े, आर्य समाज दानिशमन्दा की भजन मण्ड़ली, बस्ती वावा खेल की स्वामी दयानन्द की झांकी, आर्य समाज आर्य नगर की चारों वेदों की झांकी, हवन करवाते हुए एक झांकी, आर्य हाई स्कूल के छात्र, लाला गंगाराम मिडल स्कूल के बच्चे, गुरूकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी तथा आचार्य विशेष रूप से शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए। सारे रास्ते में कई दानी सज्जनों ने कई प्रकार के लंगर लगाए हुए थे। सारी शोभायात्रा बड़ी शानो शौकत से सम्पन्न हुई। उसके बाद कम्युनिटी हाल भार्गव नगर में विशाल लंगर का प्रबन्ध किया गया जो शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस सारे प्रोग्राम को सफल बनाने में श्री राज कुमार प्रधान, श्री लाभ चन्द मन्त्री, श्री बिशम्बर कुमार मन्त्री, श्री मोनू जी, श्री रत्न लाल, श्री ज्योति रत्न, श्री राम मिलन, माता सत्या, माता शीला, बहन कान्ता, श्रीमती गैंदा, श्री सोमनाथ, श्री बनारसी लाल आदि का विशेष योगदान रहा।

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पदाधिकारियों सर्वश्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री, श्री सुधीर शर्मा कोषाध्यक्ष एवं श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के संरक्षक एवं सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य और प्रधान श्री राज कुमार। ऊपर एवं नीचे इस अवसर पर शोभायात्रा का एक दृश्य।

सारे कार्यक्रम को विशेषकर शोभा यात्रा में श्री यशपाल प्रधान आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दा, श्री निर्मल मन्त्री आर्य समाज बस्ती वावा खेल, श्री सतपाल प्रधान, श्री वेद आर्य मन्त्री आर्य समाज आर्य नगर, श्री अमर नाथ, बूटी राम आर्य समाज गांधी नगर-2 का विशेष सहयोग रहा। इस कार्यक्रम को विशेष आशीर्वाद श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री सुधीर शर्मा कोषाध्यक्ष, श्री अशोक परूथी रजिस्ट्रार, श्री सरदारी लाल संरक्षक आर्य समाज वेद मन्दिर, श्री कमल किशोर संरक्षक आर्य समाज वेद मन्दिर का प्राप्त हुआ।

-सुदेश कुमार मन्त्री

स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर का 56वां वार्षिक गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में माघ महीने में चलने वाला गायत्री महायज्ञ दिनांक 14 फरवरी 2016 रविवार को पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। मकर संक्रान्ति से प्रारम्भ होकर यह गायत्री महायज्ञ बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ एक महीने चला और इस महायज्ञ में बहनों तथा भाईयों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। लगातार एक महीने तक बाहर से आए विद्वानों के प्रवचन होते रहे। इस कार्यक्रम की यह विशेषता है कि बाहर से भजनोपदेशकों को नहीं बुलाया जाता और स्त्री समाज की बहनों के द्वारा भजन गाए जाते हैं। इस वर्ष 14 से 20 जनवरी तक आचार्य उदयन आर्य करतारपुर, 21 से 27 जनवरी तक आचार्य शिवदत्त पाण्ड़े उत्तर प्रदेश, 29 से 4 फरवरी तक आचार्य सुरेश शास्त्री जालन्धर तथा 6 फरवरी से 14 फरवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं माता सत्याप्रिया जी सुन्दरनगर वालों के प्रवचन होते रहे। सभी विद्वानों ने गायत्री महामन्त्र, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ एवं वेदों के ऊपर चर्चा करते हुए सभी को आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। यह सम्पूर्ण कार्यक्रम स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी की अध्यक्षता में चलता रहा जिसमें सभी बहनों ने अपना तन-मन और धन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया। दिनांक 14 फरवरी 2016 रविवार को गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति 31 हवनकुण्ड़ों पर की गई। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्यप्रकाश शास्त्री एवं पं. बुद्धदेव ने मन्त्रोच्चारण करते हुए यज्ञ को सम्पन्न करवाया। भारी संख्या में लोगों ने यजमान बनकर यज्ञ में भाग लिया। यज्ञ के ब्रह्मा तथा अन्य विद्वानों के द्वारा यजमानों को आशीर्वाद दिया गया। पूर्णाहुति के पश्चात मुख्य कार्यक्रम श्रीमती राजमोहिनी सोंधी जी की अध्यक्षता में शुरू हुआ। करतारपुर से आए आचार्य जी ने प्रवचन करते हुए कहा कि ईश्वर की आज्ञा का पालन करना ही वास्तव में सच्ची पूजा एवं प्रभु भक्ति है। श्रीमती राजमोहिनी सोंधी जी ने कहा कि स्त्री समाज की प्रधान श्रीमती सुशीला भगत के नेतृत्व में समाज के सभी कार्यक्रम बड़ी सफलता से चल रहे हैं क्योंकि वह टीम वर्क की भावना से काम करती हैं तथा समाज के सभी लोगों को जोड़ती हैं। उन्होंने सभी महिलाओं को भविष्य में भी पूर्ण सहयोग देने का आह्वान किया। दमयन्ती सेठी ने हे गायत्री माता तुझको लाखों प्रणाम और रजनी सेठी ने धन्यवाद प्रभु तेरा कैसे करूं, मेरे पास ऐसी वाणी नहीं, भजन सुनाकर अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की। श्रीमती ज्योति शर्मा और श्रीमती नीरू कपूर ने कार्यक्रम का संचालन किया और यज्ञ की महिमा पर प्रकाश ड़ाला। स्त्री समाज की प्रधान श्रीमती सुशीला भगत ने कहा कि पूरा मास चले इस कार्यक्रम में उन्हें सभी की ओर से पूर्ण सहयोग मिला है। उन्होंने सभी के सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त किया। समारोह में उन्होंने राजरानी शर्मा, सरला सेतिया, दमयन्ती सेठी, डॉ. सुषमा चोपड़ा, बाला मधोक, कमलेश नागरथ,कमला भागी, प्रोमिला अरोड़ा, अजय महाजन व अन्य को भी सम्मानित किया। समारोह में श्रीमती स्वदेश महाजन, उषा महाजन, रोमिला आर्य, गुलशन शर्मा, हिन्दपाल सेठी व अन्य भी मौजूद थे। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ और तत्पश्चात सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर की प्रधाना एवं अन्य सदस्या आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की पूज्य माता राजरानी शर्मा जी को सम्मानित करते हुये।

-प्रोमिला अरोड़ा, रजनी सेठी मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।